ACHIEVEMENTS OF CHARLEMAGNE-1

FOR:U.G.PART-1,PAPER-2
BY:ARUN KUMAR RAI
ASST.PROFESSOR
P.G.DEPT.OF HISTORY
MAHARAJA COLLEGE
ARA.

पृष्ठभूमि

- संपूर्ण मध्य युग में **चार्ल्स महान** जिसे लैटिन में **शार्लमा** (Charlemagne)**कार्ल डेर ग्रास** (Karl der Grosse)**कार्लो मैगनो**((Carlo Magno) भी कहा जाता है, यूरोप का संभवत सबसे अधिक असाधारण सम्राट था ।उसने रोमन साम्राज्य के पतन तथा 16 वीं सदी के बीच सबसे बड़े साम्राज्य का निर्माण किया और उसने शासन के लिए आदर्श सिद्धांत दिए ।उसके सचिव ने उसे '**एक महान और प्रतिष्ठित शासक**' तथा विद्वानों ने उसे '**अपूर्व साहस और महान गुणों का मनुष्य** माना है।

पृष्ठभूमि

- चार्ल्स का जन्म ***742 ईसवी*** में हुआ था किंतु उसके मूल जन्म स्थान के बारे में जानकारी नहीं है। वह ***जर्मन*** था इसलिए जर्मन जाति के सारे गुण, प्रवृत्ति और विशेषताएं उसमें देखने को मिलती हैं। फ्रैंको की प्रथा के अनुसार ***पिपिन*** ने ***768 ई.*** में अपनी मृत्यु से पूर्व राज्य का विभाजन अपने दो पुत्रों ***चार्ल्स*** एवं ***कार्लोमन*** के बीच किया था। ***771ई.*** में कार्लोमन की मृत्यु हो गई और चार्ल्स संपूर्ण ***फ्रैंक राज्य*** का एकछत्र स्वामी बन गया।

शार्लमा के विजय अभियान

- चार्ल्स के 43 वर्षों का शासन काल प्रधानतया युद्धमय था ।54 सैनिक अभियानों में से अधिकांश का नेतृत्व उसनें किया था तथा इसमें कोई संदेह नहीं कि अपनी सफल लड़ाईयों के कारण ही उसे ***महान*** अथवा ***शार्लमा*** की उपाधि मिली ।अपने शासन के सारे वर्षों में केवल एक वर्ष ***790 ईसवी*** में युद्ध से अलग रहा।

शार्लमा के विजय अभियान

- चार्ल्स के युद्ध के तीन उद्देश्य थे-

1. राज्य विस्तार
2. सीमाओं की सुरक्षा
3. विधर्मी को ईसाई मत में शामिल करना

कायदे से देखा जाए तो चार्ल्स की विदेश नीति के दो मुख्य उद्देश्य थे-क्षेत्रीय विस्तार और ईसाई मत का प्रसार ।इन दोनों उद्देश्यों की पूर्ति में उसे असाधारण सफलता मिली। वह बर्बर युग में भी एक संगठित साम्राज्य का शासन करने और ईसाई धर्म को फैलाने में समर्थ हुआ।

शार्लमा के विजय अभियान

- शार्लमा ने निम्नलिखित प्रदेशों पर विजय पायी-

1.लोम्बार्डी की विजय(776 ई.)- शार्लमा ने शासन के शुरुआत में लोम्बार्डी के शासक ***डेसीडेरियस*** की पुत्री से विवाह किया था तथा विवाह किया था तथा विवाह के एक वर्ष के उपरांत ही अपनी पत्नी को तलाक दे दिया ।पोप ने इस विवाह का विरोध किया था,फलतः डेसीडेरियस ने युद्ध की घोषणा कर दी । 1 वर्ष तक चले इस युद्ध में शार्लमा नै लोम्बार्डी को बुरी तरह रौंद दिया।

2.***बवेरिया की विजय(788ई.)***-सैद्धांतिक रूप से बेवेरिया बहुत दिनों तक फ्रैंक सम्राट के अधीन था। बवेरिया चर्च को भी रोमन चर्च के अंतर्गत स्वायत्तता प्राप्त थी।

शार्लमा के विजय अभियान

अतः एक ओर चार्ल्स एवं पोप, बेवेरिया पर अपना पूर्ण नियंत्रण स्थापित करना चाहते थे तो दूसरी ओर ***ड्यूक तासिल*** पूर्ण स्वतंत्रता की कामना करता था। चार्ल्स ने विवेरिया पर आक्रमण कर तासिल को पराजित किया तथा बेवेरिया को फ्रैंक साम्राज्य में मिला लिया।

- **सैक्सो की विजय:** चार्ल्स की सबसे अधिक भयंकर लड़ाई सैक्सनों के साथ हुई।जर्मन जाति में सेक्शन लोग ही अभी तक पूर्ण असभ्य और ईसाई धर्म के विरोधी थे। वह अभी तक अपने पुराने देवताओं की पूजा करते थे ।वे फ्रैंक प्रदेशों पर हमला कर गिरजा घरों को जलाते और पादरियों की हत्या करतेथे। शार्लमा ने ***775 ईसवी*** में चर्च के सहयोग से सैक्सोनी पर आक्रमण किया।

शार्लमा के विजय अभियान

- सैक्सोनी को ***फ्रांक राज्य*** का अंग बनाने में पूरे 30 वर्ष लग गए। चार्ल्स ने वहां के पुराने देवताओं के स्थानों को धूमिल कर दिया ।उनके मंदिर को भी नष्ट कर दिया और मूर्तियों को तोड़ डाला ।एक दिन में 45000 नागरिकों का वध कर डाला। उसके इन कठोर कार्यों से सैक्शन लोग बहुत ही आतंकित हुए और उन्होंने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया तथा शार्लमा की अधीनता स्वीकार कर ली ।सैक्सोनी की विजय शार्लमा की महान राजनीतिक तथा सांस्कृतिक विजय मानी जाती है।

शार्लमा के विजय अभियान

- शार्लमा ने स्लाव जाति का दमन कर उनसे वार्षिक कर लेना शुरू किया।
- शार्लमा ने डेनों तथा हूणों से समझौता किया।
- शार्लमा ने मुसलमानों के हत्याकांड पर नियंत्रण रखने के लिए **795ई.** में स्पेनी सीमाकन किया और **797 ई.** में बार्सिलोना की विजय कर डाली तथा इसके साथ स्पेन के सीमांकन को मिला दिया। उसने मुसलमानों को सफलतापूर्वक कोर्सिको,सर्डेनिया, तथा बेलेरिक से खदेड़ दिया।

शार्लमा के विजय अभियान का महत्व

- शार्लमा के सफल अभियानों के कारण मध्य यूरोप का वह सर्वाधिक महान विजेता तथा सफल सेनानायक रूप में प्रसिद्ध हो गया। उसके साम्राज्य में ***फ्रांस, नीदरलैंड बेल्जियम ,ऑस्ट्रिया ,स्वीटजरलैंड ,जर्मनी ,इटली चेकोस्लोवाकिया, युगोस्लाविया*** के कुछ भाग शामिल थे पश्चिमी यूरोप के लगभग सभी राज्यों पर शार्लमा के अधिकार कायम हो गये।रोम साम्राज्य के पतन के उपरांत पहली बार पश्चिमी यूरोप एकता के सूत्र में बंधा हुआ पाया ।इसे ***द्वितीय रोम साम्राज्य*** कहा जा सकता है।

शार्लमा का राज्याभिषेक

- शार्लमा का राज्याभिषेक मध्ययुगीन यूरोपीय इतिहास की अत्यंत ही महत्वपूर्ण राजनीतिक घटना है ।उसकी अनेक महान उपलब्धियों में यह उपलब्धि स्वतः बिना किसी प्रयास के प्राप्त हो गई जिसका तत्कालीन तथा आगामी यूरोपीय राजनीति पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। यह घटना ***25 दिसंबर 800 ईसवी*** को घटी । रोम के ***पोप लियो तृतीय*** ने स्वयं अपने हाथों से ***संत पीटर*** के गिरजाघर में पूजा की बेदी पर झुके हुए ध्यान मग्न शार्लमा के सिर पर हीरे- जवाहरात जड़ित राजमुकुट रख दिया तथा उसका राज्याभिषेक कर दिया। इस घटना को ***राज्याभिषेक (Coronation)*** कहा जाता है।

शार्लमा का राज्याभिषेक

- राज्य अभिषेक पूर्व शार्लमा ***फ्रांको*** तथा ***लोम्बार्डी*** का राजा मात्र था। राज्याभिषेक के उपरांत वह रोमनों का भी सम्राट हो गया। अब वह जहां पश्चिम रोम साम्राज्य का सम्राट था वही व पूर्वी रोम साम्राज्य का मित्र था ।***इतिहासकार ओमान*** ने राज्याभिषेक की घटना को ***मध्य यूरोप में एक नए युग की शुरुआत*** माना है।कछ इतिहासकारों ने इसे ही ***पवित्र रोमन सम्राज्य*** कहा है ।राज्याभिषेक के संदर्भ में ***विल डयूरा*** का विचार है कि ***राज्याभिषेक के साथ बर्बरता ,हिंसा और अज्ञानता पर सुरक्षा ,शांति और सभ्यता का स्वपन पनपने लगा।***

To be continued.....